ब्रह्माकुमारियों और इस्लाम के बीच आश्चर्यजनक समानताएँ

विश्व प्रसिद्ध ब्रह्माकुमारी विद्यालय की सफेद पोशधारी बहनों को देखकर भारतीय समाज में अनायास ही उनके और ईसाई धर्म में समानता की बात तो कइयों के मन में ज़रूर कौंधी होगी, किंतु ब्रह्माकुमारीज़ और इस्लाम के बीच संबंध की बात तो किसी को आश्चर्यजनक ही लगेगी।

ब्रह्माकुमारी विद्यालय द्वारा प्रतिपादित ज्ञान के अनुसार मनुष्य सृष्टि का यह चक्र 5000 वर्ष का है, जिसमें से सतयुग और त्रेतायुग अर्थात् स्वर्ग की आयु 2500 वर्ष की होती है। इसी प्रकार, द्वापरयुग और कलियुग अर्थात् नर्क की आयु भी 2500 वर्ष की होती है। स्वर्ग में केवल एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म होता है, जब धर्म का रूप वर्तमान आडंबरपूर्ण न होकर पवित्र जीवन जीने का एक मार्ग था, किंतु जब द्वापरयुग से हम देह अभिमान में आते हैं और दुख-अशांति बढ़ती है तो सबसे पहले इस्लाम, फिर बौद्ध धर्म और फिर ईसाई धर्म की स्थापना होती है। बाद में, कलियुग में मुस्लिम धर्म, सन्यास धर्म, सिक्ख धर्म, आर्य समाज और फिर नास्तिक धर्म अर्थात् साम्यवाद की स्थापना होती है। जब धर्म की अतिग्लानि हो जाती है तब कलियुग और सतयुग के संगम समय अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग पर स्वयं परमपिता शिव परमात्मा भारत भूमि में आकर जगदंबा और जगतपिता के द्वारा सारे विश्व की आत्माओं को एक सूत्र में बाँध कर पुन: उस प्राय:लोप हुए आदि सनातन देवी-देवता धर्म तथा स्वर्ग की स्थापना करते हैं।

ब्रह्माकुमारी विद्यालय द्वारा प्रकाशित आध्यात्मिक ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही 5000 वर्षों के नाटक की शूटिंग अथवा रिहर्सल होती है। हर धर्म की मान्यताओं, रीति-रिवाजों की शूटिंग या रिहर्सल परमपिता शिव द्वारा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के ईश्वरीय परिवार में देखी जा सकती है। जैसे ब्रह्माकुमारी विद्यालय के सदस्य, विशेषकर वहाँ रहने वाली बहनें, सफेद पोश पहनकर, बिन्दी (तिलक) का त्याग कर तथा कॉन्फ्रेंस, मेले इत्यादि में कैन्डिल जलाकर और लाल टेप काटकर ईसाई धर्म से अपनी समानता का इजहार करते हैं, उसी प्रकार ब्रह्माकुमारी विद्यालय द्वारा द्वापरयुग से स्थापित होने वाले इस्लाम धर्म की भी शूटिंग होती है।

परमपिता शिव द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों को यह शिक्षा दी गई है कि गीता के महावाक्य–मन्मनाभव, मद्याजीभव, के अनुसार श्वासोंश्वास परमात्मा को याद किया जाना चाहिए, किंतु ब्रह्माकुमारी विद्यालय में दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा बाबा के देहावसान के पश्चात् किसी वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी द्वारा दिन में पाँच बार विशेष आध्यात्मिक गीत की सहायता से निराकार परमात्मा को याद करने की परंपरा प्रारंभ की गई, जो कि ट्रैफिक कंट्रोल गीतों के नाम से प्रसिद्ध है। माउंट आबू स्थित ब्रह्माकुमारी विद्यालय में रह कर आए किसी भी व्यक्ति ने इस बात को ज़रूर नोट किया होगा। यह वास्तव में किसी वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी द्वारा अनजाने में ही इस्लाम धर्म में पाँच बार नमाज रूपी गीत अदा करने की परंपरा अथवा रिहर्सल करवाई जा रही है। (दिनांक 15.4.71 पृ.1 के आदि का मुरली प्वाइंट----गीत गाना नहीं है। वास्तव में सुनना भी नहीं है।)

इसी प्रकार, सन् 1936-37 में इस ईश्वरीय परिवार की स्थापना से अब तक कभी भी किसी सदस्य के देहांत पर उनकी समाधि बनाने का उदाहरण नहीं देखा जा सकता है, किंतु सन् 1969 में दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा बाबा के देहावसान और अंतिम संस्कार के पश्चात् ब्रह्माकुमारी विद्यालय की तत्कालीन मुखिया द्वारा परमपिता शिव के श्रीमत के खिलाफ विद्यालय के प्रांगण को ही कब्रस्तान बनाकर ब्रह्मा बाबा की कब्र जैसी समाधि बनवाई गई, जहाँ आज भी अनभिज्ञ ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ भगवान शिव के स्थान पर दादा लेखराज के पार्थिव शरीर को याद कर दुखी होते हैं और यह सोचते हैं कि काश हम भी दादा लेखराज के तन में आए परमात्मा शिव से मिल पाते। किंतु, वे उस समाधि पर जाकर यह भूल जाते हैं कि सभी धर्मपिताओं के भी पिता–परमपिता शिव देवी-देवता धर्म की स्थापना के अपने कार्य को अधूरा छोड़कर नहीं जा सकते हैं, और वे अपनी तीन साकार मूर्तियों में से दूसरी मूर्ति अर्थात् महादेव शंकर का पार्ट बजाने वाले साधारण मनुष्य में प्रवेश कर अपना महान कार्य जारी रखे हुए हैं। मुरली प्वाइंट्स :

1. शंकर के लिए कहते हैं ना कि एक सेकेंड में आँख खोली और विनाश। यह संहारीमूर्त के कर्तव्य की निशानी है। (अ.वा.11.7.70 पृ.287 अं.)
2. शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है; लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। (अ.वा.9.10.71 पृ.194 अं.)
3. अब बाप कहते हैं, मेरा भी ड्रामा में पार्ट है–ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश। (मु.19.3.87 पृ.2 अं.)
4. तो बाबा ने शंकर का भी समझाया कि उनका कोई पार्ट नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि शंकर (को) उड़ाय देना है। त्रिमूर्ति चित्र तो है ना। (मु.24.9.75 पृ.1 अं.)
5. "ब्रह्मा का नाम भी न लो; इसलिए बाबा-मम्मा का फोटो रखना भी पसन्द नहीं करते। कब-कब ख्याल आता है सभी फोटो निकाल दें।" (मु.8.3.69 पृ.3)
6. वास्तव में तुमको इनका(ब्रह्मा) फोटो भी न रखना चाहिए। बाबा का फोटो कोई माँगते हैं, तो बाबा समझ जाते हैं–यह शिवबाबा को याद नहीं करते हैं तब इनका चित्र माँगते हैं। तुम्हारा वास्तव में इनसे कोई काम नहीं है। (मु.24.1.75 पृ.1 मध्यांत)

ब्रह्माकुमारी विद्यालय में दादा लेखराज एवं माता सरस्वती के जीवित रहने तक मात-पिता के रूप में प्रतिदिन आध्यात्मिक संगठन में उपस्थित भाई-बहनों को आत्मिक दृष्टि देते हुए आत्मा एवं परमात्मा की अनुभूति कराते थे। उनका ऐसा करना सही था; क्योंकि दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा बाबा में परमपिता शिव की प्रवेशता थी, जो कि पतितों को पावन बनाने वाले हैं, किंतु दादा लेखराज के निधन के पश्चात् ब्रह्माकुमारी विद्यालय की मुखिया ने स्वयं दूसरों को दृष्टि देने की परंपरा को जारी रखा तथा उनका अनुसरण करते हुए अन्य ब्रह्माकुमारियों ने भी आश्रम में आने-जाने वाले जिज्ञासुओं को राजयोग सिखाने के बहाने दृष्टि देना और लेना प्रारंभ कर दिया। किंतु, पतित-पावन परमपिता शिव की श्रीमत के विरुद्ध पतित आत्माओं के साथ दृष्टि के इस लेन-देन से ब्रह्माकुमारी विद्यालय में मूल्यों का पतन होने लगा। वास्तव में, राजयोग के बहाने दृष्टि के इस लेन-देन की यह परंपरा द्वापरयुग से इस्लाम धर्म में भाई-बहनों रूपी बी.केज़ के बीच बहुविवाह रचाने की परंपरा की रिहर्सल है। भारतीय इतिहास को देखें तो मुसलमान शासकों

के आगमन से पहले भारतीय राजाओं में अनेक पत्नियाँ रखने का रिवाज नहीं था। पौराणिक कथाओं के कुछ उदाहरण इसके अपवाद हैं; परन्तु वे वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग की ही यादगार है। मुरली प्वाइंट्स .....

- बाबा कहते हैं, मैं एक-एक आत्मा को सकाश देता हूँ। सामने बैठ लाइट देता हूँ। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे। (मु.21/3/89 पृ.3 अं.)
- आँखें बड़ा धोखा देती हैं। इन आँखों को कब्जे में(अधिकार में) रखना है। (मु.5.7.89 पृ.2 अं.)
- अच्छे-अच्छे सेन्टर्स के अच्छे-अच्छे बच्चों की क्रिमिनल आई रहती है। (मु.18.8.70 पृ.3 अं.)
- ऐसे कोई कह न सके हमारी आँखें क्रिमिनल काम नहीं करतीं। अगर सिविल आइज़ हो जाए तो बाकी क्या चाहिए! भल विकार में नहीं जावेंगे; परन्तु कुछ न कुछ आँखें धोखा देती रहेंगी, जब तक कर्मातीत अवस्था हो जाए। (मु.17.8.70 पृ.2 अं., 3 आ.)

भारतीय धर्मों में ईश्वर की साकार उपासना की परंपरा है, किंतु इस्लाम, ईसाई धर्म आदि में निराकार ज्योति रूप ईश्वर की मान्यता है। सन् 1969 में दादा लेखराज के निधन के पश्चात् दादा लेखराज और माता सरस्वती की तस्वीर एक साथ प्रदर्शित करने की परंपरा थी, जो कि युगल रूप में देवी-देवताओं की उपासना का यादगार है, किंतु ब्रह्माकुमारी विद्यालय में इस्लाम धर्म की प्रवृत्ति वाली मुख्य आत्मा ने केवल दादा लेखराज और परमात्मा शिव ज्योतिर्बिंदु के चित्र को बढ़ावा दिया, जो कि निराकार ईश्वर की उपासना का यादगार है। इस प्रकार, ब्रह्माकुमारी विद्यालय और इस्लाम के बीच यह आश्चर्यजनक समानता और संबंध है। संगमयुग पर स्थापित ईश्वरीय परिवार में इस्लाम धर्म की यह रिहर्सल जानबूझकर नहीं, अपितु अनजाने में ही हो जाती है और ब्रह्माकुमारी विद्यालय की जिस आत्मा ने दादा लेखराज के निधन के पश्चात् इस्लाम धर्म की इस रिहर्सल में सबसे ज्यादा योगदान दिया, वही द्वापरयुग में अर्थात् आज से 2500 वर्ष पहले पैगंबर इब्राहिम की आधारमूर्त बनती है, जिसमें इब्राहिम की सोल प्रवेश कर वाममार्गी पार्ट बजाती है। इन बातों की पहचान भी परमपिता शिव द्वारा ही सन् 1969 के बाद शंकर के साकार माध्यम द्वारा दी जाती है, जो कि सृष्टि चक्र के आदि, मध्य और अंत का ज्ञान अभी भी दे रहे हैं तथा कंपिल, उत्तर प्रदेश से विश्व परिवर्तन के महान कार्य को तीव्रगामी दिशा दे रहे हैं।

ओमशान्ति।